IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, August 2024

मानव जीवन के विकास में पर्यावरण का महत्व

मधुलता कुशवाहा
शोधार्थी भूगोल
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय,
रीवा (म.प्र.)

डॉ. आर. के. शर्मा
प्रभारी प्राचार्य
शासकीय महाविद्यालय, रामनगर
जिलासतना (म.प्र.)

सार

पृथ्वी के धरातल पर मानव की जन्म प्राकृति के अद्भुत देन है मानव के बुध्दि का प्रकत्प, विकल्प , व्यक्तित्व और कृतित्व से अन्य जीवन जगत से विशिष्ट एवं प्रथक बना देता हैअधोलिखित विशेषताओं के कारण ही मानव अपनी प्राथमिक अवश्यकताओं को पूरा करने के लिए चिंतन शील होकर पर्यावरण से अन्तर्सम्बंध स्थापित करने लगा मानव ने निश्चित पर्यावरण में रहकर बुध्दिबल और कार्यो द्वारा एक विशिष्ट संस्कृति का निर्माण किया , साथ ही प्रकृति के नियमों का पालन करते हुए सामाजिक मूल्यो और आदर्शो को भी स्थापित किया। मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता भोजन, वस्त्र, आश्रय से लकर व्यवसाय , कार्यक्षमता, स्वास्थ्य ,ज्ञान-विज्ञान , भाषा, संस्कृति धर्म आदि के निर्धारण में पर्यावरणीय तथ्यो की महत्वपूर्ण रहती है। मानव अन्य जीवो की तरह अपने आपको प्राकृतिक पर्यावरण के अनुरूप बनाने के लिए अनुकूल रूपान्तरण एवं समायोजन करता रहता है। किसी भी प्रदेश में पर्यावरण एवं मानव केमाध्य संबंधो को वहा के जनसंख्या वितरण के द्वारा समझने में अनुकूलता रहती है मनुष्य किसी भी भौगोलिक प्रदेश में पर्यावरणीय तत्वो का जितना अधिक अनुकूलतम प्रयोग करने में समर्थ है वहा के आर्थिक संसाधन उतनी ही अधिक ससक्ता और जनसंख्या बसाव भी उतना अधिक होगा। जैस यूरोप देश एशिया देश आदि । इसके विपरीत प्रौद्योगिकी के पिछडेपन और आज्ञानता के कारण किसी भौगोलिक इकाई मे मानव स्थानीय संसाधनो का विदोहन एंव आर्थिक उपयोग नही कर पाया वे क्षेत्र आर्थिक रूप से सशक्त नही हो पाये और जनसंख्या बसाव भी कम देखने को मिलेगा जैसे दक्षिण अमेरिका का अमेजन बेसिन, विषुवत रेखीय वर्षा वनो के क्षेत्र , मध्य अफ्रीका कांगो बेसिन आदि।

शब्दकोश :- बुध्दि का प्रकल्प, संस्कृति, अनुकूलन, रूपांतरण, समायोजन, जनसंख्या, वितरण, प्रौद्योगिकी।